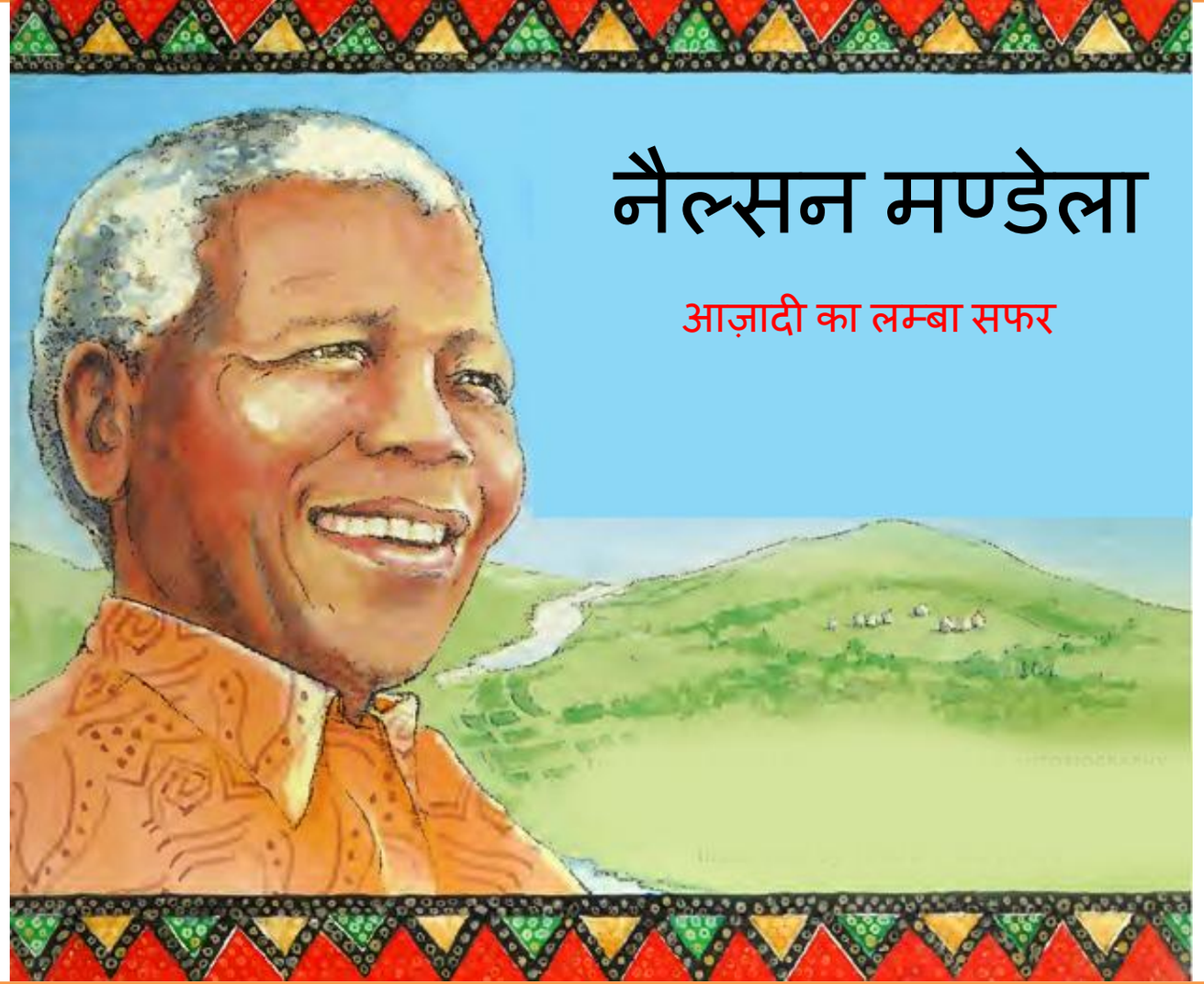
नैल्सन मण्डेला
आज़ादी का लम्बा सफर

''मैं शान्ति, लोकतंत्र और आज़ादी के नाम पर आप सबका अभिवादन करता हूँ।''

यह चित्रकथा मण्डेला की अद्भुत आत्मकथा नैल्सन मण्डेलाः लाँग वाक टू फ्रीडम का संक्षिप्त रूप बीसवीं शताब्दी के दुनिया भर के सबसे प्रिय व्यक्तित्वों में से एक की जीवन कथा को छोटे पाठकों के लिए प्रस्तुत करती है। दक्षिण अफ्रीका के एक नन्हे से गाँव से लेकर अफ्रीकन नैशनल कांग्रेस तक, और कैदखाने से लेकर राष्ट्रपति पद तक के सफर में आप उनके साथ चल सकते हैं। यह पुस्तक नैल्सन मण्डेला फाउन्डेशन के उदार सहयोग से बनी है। यह चित्रकथा मण्डेला की प्रेरक आवाज़ को उभारते हुए यह भी सुनिश्चित करती है कि बदलाव ओर समन्वय का उनका सन्देश आगे आने वाली पीढ़ियाँ सुन सकें।

'यह खूबसूरत देश कभी भी किसी दूसरे के हाथों दमन का अनुभव न करे।'

नैल्सन मण्डेला के करीबी दोस्त आर्चबिशप डैसमण्ड टूटू की व्यक्तिगत श्रद्धांजलि

मैं नैल्सन मण्डेला (मदीबा) से सबसे पहले 1950 के दशक में मिला था, जब वे हमारे कालेज में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक बन कर आए थे। इसके बाद 1990 में उनके जेल से रिहा होने तक हम नहीं मिले।

मदीबा ने कैद में बिताए अपने 27 वर्षों को लेकर न तो कभी नाराज़गी जतायी न शिकायत की। शान्ति में उनकी अटूट आस्था थी, और उन्होंने हम सबको क्षमा करने का एक अत्यावश्यक पाठ तब सिखाया जब राष्ट्रपति चुने जाने के बाद उन्होंने उस व्यक्ति को आमंत्रित किया जो कैदखाने में उनका गार्ड था।

उन्हें लोगों की फिक्र थी, इसलिए उन्होंने बड़ी मेहनत से परोपकारी संस्थाएँ बनाईं, अनुदान जुटाए ताकि दक्षिण अफ्रीका के लिए एक बेहतर भविष्य बनाया जा सके। मदीबा का मानना था कि बच्चे भविष्य का अहम हिस्सा हैं, सो अपने वेतन से योगदान दे उन्होंने नैल्सन मण्डेला बाल कोष की स्थापना की। इसलिए यह खुशी की बात है कि यह पुस्तक बन सकी है ताकि बच्चे उनके प्रेरणादायक जीवन के बारे में जान सकें।

मदीबा के बारे में मेरी सबसे प्रिय स्मृति यह है कि वे एक मज़ाकिया इन्सान थे। एक बार मैंने उनकी रंग-बिरंगी कमीज़ों का मज़ाक उड़ाया जो वे पहना करते थे। उन्होंने जवाब में कहा कि वे कम से कम सबके सामने मेरी तरह ड्रेस तो नहीं पहनते!

सच तो यह है कि नैल्सन मण्डेला के कारण हमारी यह दुनिया एक बेहतर जगह बन सकी है। उन्होंने हम सबको एक-दूसरे के अंतरों को समझने और उनकी इज़्ज़त करने के बारे में बहुत कुछ सिखाया।

वे सचमें एक आश्चर्यजनक इन्सान थे और मैं बेहद भाग्यशाली हूँ कि वे मेरे दोस्त थे।

नैल्सन मण्डेला

आज़ादी का लम्बा सफर

मण्डेला की आत्मकथा पर आधारित आधिकारिक चित्रकथा,
आर्चबिशप डैस्मण्ड टूटू के प्राक्कथन के साथ।

संक्षिप्तिकरण: क्रिस वैन वाय्क, चित्र: पैडी बोउमा

हिन्दी रूपान्तर - पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरा नाम नैल्सन मण्डेला है। मैं दक्षिण अफ्रीका में रहता हूँ, जो अफ्रीकी महाद्वीप के छोर पर बसा एक बेहद खूबसूरत देश है। आज दक्षिण अफ्रीका एक लोकतंत्र है। इसका मतलब यह है कि सभी वयस्क नागरिक मतदान द्वारा उस व्यक्ति को चुनते हैं, जिसे वे चाहते हैं कि वह देश चलाए। पर हमेशा ऐसा नहीं था।

जब मैं पैदा हुआ, उस वक्त दक्षिण अफ्रीका पर सिर्फ गोरों का राज था। जैसे-जैसे मैं बड़ा होने लगा मुझे नज़र आने लगा कि यह सरासर नाइन्साफी है। मैं सरकार बनाने के इस तरीके को बदलना चाहता था, ताकि सरकार बनाने में सभी लोगों की राय शामिल हो। मेरे दोस्त और मैं इस कोशिश को आज़ादी का संघर्ष कहते थे। यह संघर्ष कई सालों तक चला, और मैं इस जंग में एक सिपाही था। यह मेरी कहानी है...

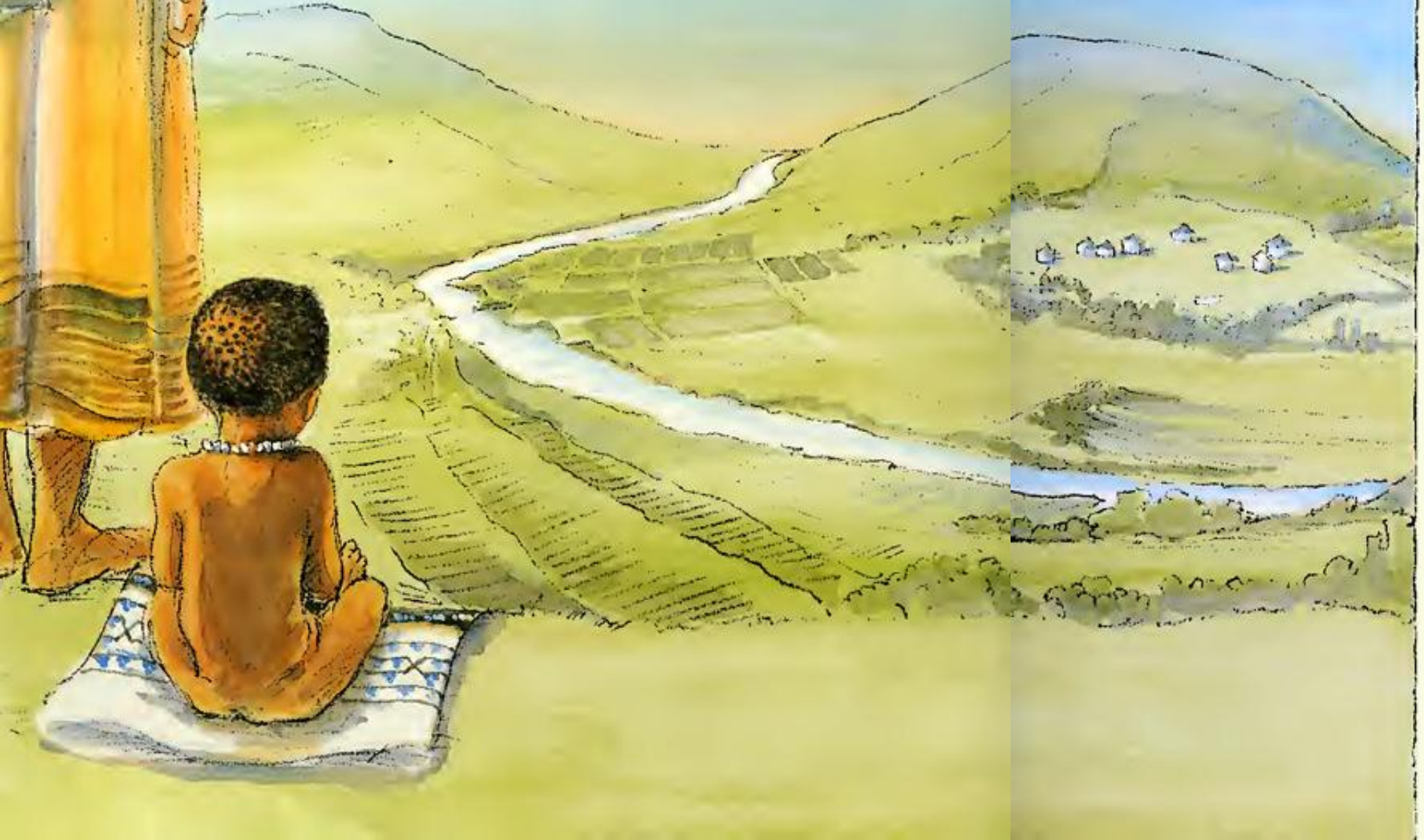

बहुत समय पहले, गोरे यूरोपवासी, समुद्र पार कर दक्षिण अफ्रीका आए। उन्होंने यहाँ ज़मीन के लिए जंग लड़ी, और वे उन सभी कबीलों के लोगों से भी लड़े जो पहले से ही यहाँ रहते थे, जैसे कोह्त़, ज़ूलू और त्स्वाना।

इसके सैकड़ों साल बाद मैं थेम्बू कबीले में पैदा हुआ, जो उन कई कबीलों में एक था जिन्हें मिला कर कोह्त़ राष्ट्र बना था। खूबसूरत पूर्वी अंतरीप के म्वेत्ज़ो के छोटे से गाँव में 18 जुलाई, 1918 को मैंने इस दुनिया में प्रवेश किया।

मेरे पिता एक थेम्बू सरदार थे, मतलब हमारे कबीले के एक नेता थे। उन्होंने मेरा नाम रोह्लिलाला रखा। कोह्ज़ भाषा में इसका मतलब होता है खुराफाती या परेशानियाँ खड़ी करने वाला। क्या वे सचमें यह मानते थे कि मैं बड़ा होकर परेशानियाँ पैदा करूँगा? मुझे यह नहीं लगता। कोई भी यह नहीं जानता था कि मेरा भविष्य दरअसल क्या होने वाला था।

जब मैं छोटा ही था हम म्वेत्ज़ो से हट कर पास के एक दूसरे गाँव कूनू में जा बसे। मैं अपने परिवार की भेड़-बकरियाँ चराने लगा। ये सच में मस्ती के दिन थे। मेरे दोस्त और मैं नदियों में तैरते, मधुमक्खियों के छत्तों से शहद चुराते, और लाठियों भाँज आपस में लड़ने का खेल खेलते - जो हरेक कोह्ज़ लड़के का पसंदीदा खेल हुआ करता था।

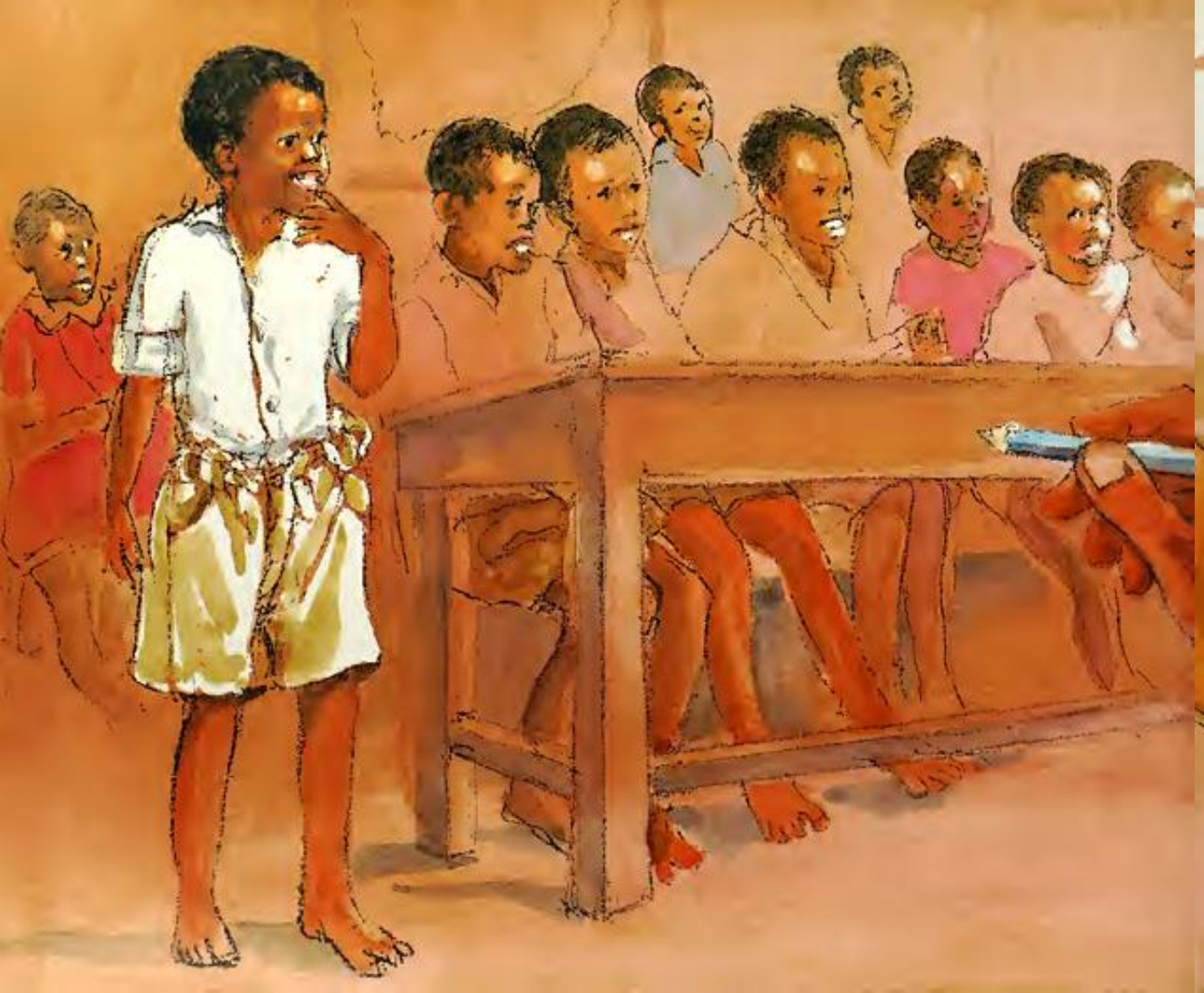

जब मैं 7 साल का हुआ मेरे पिता ने मुझे स्कूल भेजने का निर्णय लिया। वह मिशन स्कूल था, जिसे यूरोप से आए मिशनरियों ने दक्षिण अफ्रीका में आने के बाद ईसाई धर्म को फैलाने के लिए बनाया था। मेरे परिवार में इसके पहले कोई कभी स्कूल गया ही नहीं था। मेरे पास ढंग के कपड़े तक नहीं थे, सो मेरे पिता ने अपनी एक पुरानी पतलून को घुटने से काट कर मुझे दी। सुतली के टुकड़े की बेल्ट बना मैं उसे कमर पर बाँधता था। यह स्कूल तड़क-भड़क वाला नहीं था, उसमें केवल एक ही कमरा था। बाकी छात्र भी मेरे से बेहतर कपड़े नहीं पहनते थे, सो मैं आसानी से खप गया, मुझे कतई अटपटा नहीं लगा।

हमारी शिक्षिका ने हमें नए नाम दिए। मेरा नाम था नैल्सन। नैल्सन? उस समय हमारे देश पर अंग्रेज़ों का राज था, सो हमारी शिक्षिका ने सोचा कि हमारे नाम भी अंग्रेज़ी नाम होने चाहिए। शुरुआत में मुझे यह नया नाम बड़ा अटपटा लगता था, पर जल्दी ही मुझे इसकी आदत पड़ गई।

मैं स्कूल में बहुत कुछ सीख रहा था, पर साथ ही घर में भी सीख रहा था। मेरी माँ मुझे पुराने ज़माने की सीखों से भरी कहानियाँ सुनाती, जिनमें दूसरों के प्रति दयालुता के पाठ होते थे।

मेरे पिता ने मुझे बहादुर कोह्ज़ लड़का बनना सिखाया। मैं बड़ा होकर ठीक अपने पिता जैसा बनना चाहता था। कभी-कभी मैं अपने बालों में राख मल लेता, ताकि वे उनके धूसर बालों से लगें।

पर मेरी नवीं सालगिरह के बाद मेरी ज़िन्दगी बदल गई। मेरे पिता बीमार पड़े और तब उनकी मौत हो गई। मेरी माँ मुझे मेरे पिता के मित्र सरदार जोन्गिनटाबा के साथ रहने के लिए पास के गाँव म्कवेज़्वेनी ले गईं। चचा जोन्गी थेम्बू कबीले के कार्यवाहक राजा थे, और इस नाते रसूखदार इन्सान थे। उनके पास मोटरगाड़ी थी और एक बड़े से घर में रहते थे, जो 'महा निवास' कहलाता था। मेरे लिए यह बेहद उत्तेजक और नया अनुभव था! बेशक, मेरी माँ जब-तब मुझसे मिलने आया करती थी और मैं उसे देख हमशा खुश होता था।

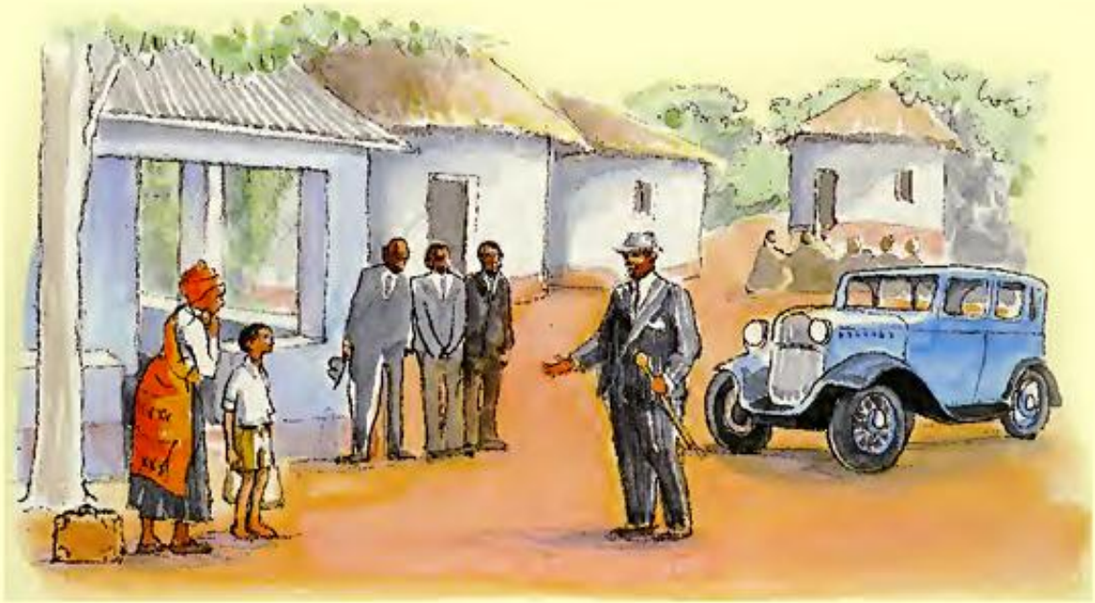

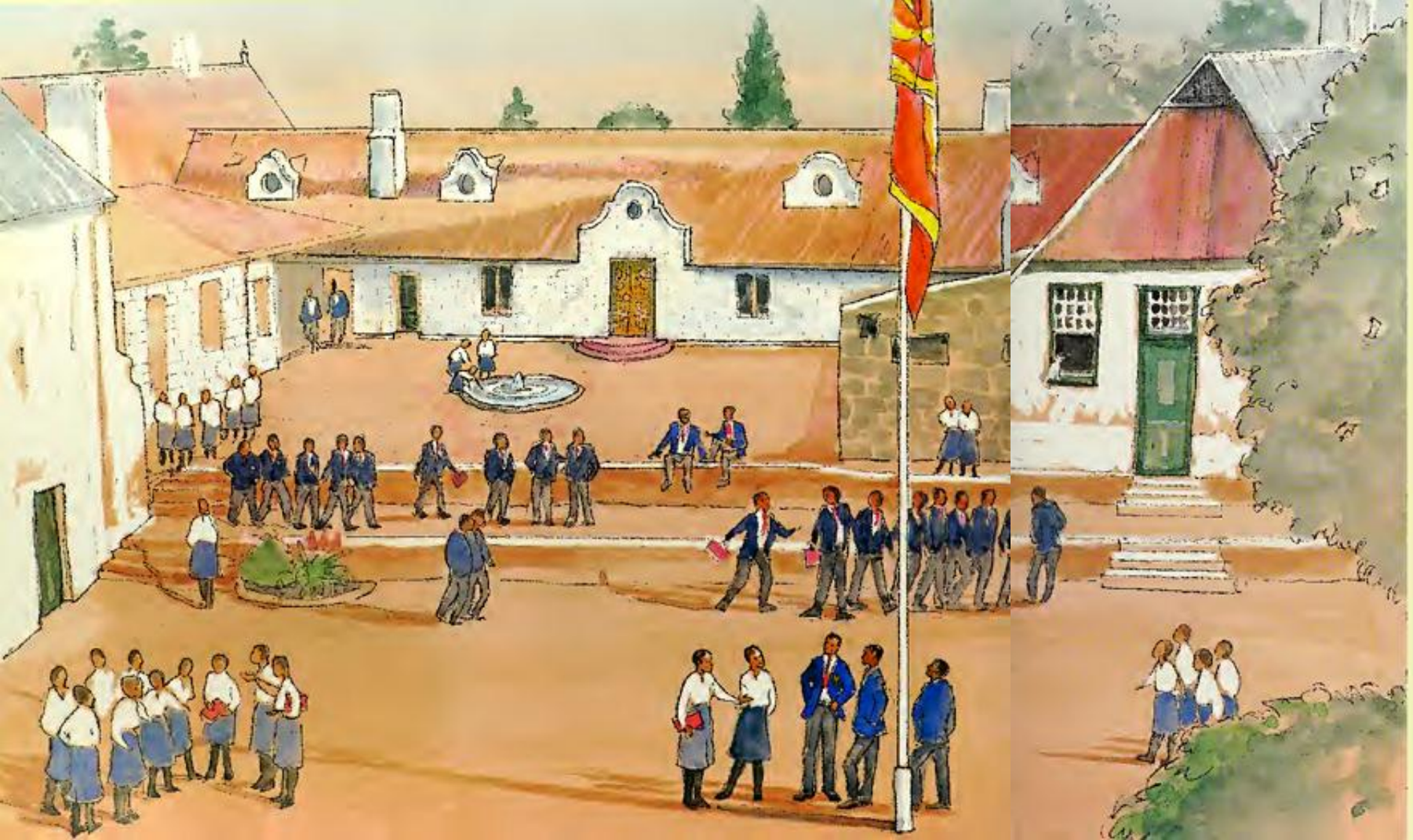

हालाँकि मुझे अपने गाँव कूनू की याद आती थी, मुझे अपना नया जीवन भी प्यारा लगता था। चचा जोन्गी का बेटा जस्टिस उम्र में मुझसे कुछ साल बड़ा था, पर हम जिगरी दोस्त बन गए। हम घोड़ों की सवारी करते और मिल-जुल कर उसके पिता के खेतों को जोतते। हमें खूब मज़ा आता था।

पर ज़िन्दगी सिर्फ घुड़सवारी और मस्ती तो नहीं होती। जब मैं सोलह बरस का हुआ चचा जोन्गी ने मुझे क्लार्कबैरी बोर्डिंग (आवासीय) स्कूल में भेज दिया। उन दिनों बहुत से लड़के-लड़कियाँ अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी नहीं करते थे, पर मेरे चाचाजी का मानना था कि शिक्षा बेहद ज़रूरी है। तीन साल यहाँ बिताने के बाद मैं हैल्डटाउन चला गया जहाँ जस्टिस पहले से ही पढ़ रहा था। यह अफ्रीकियों के लिए देश का सबसे बड़ा स्कूल था। यहाँ मैंने अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की।

इक्कीस बरस की उम्र में मैं फोर्ट हेर में दाखिल हुआ, जो पूर्वी केप में खास तौर से काले छात्रों का विश्वविद्यालय था। चाचा जोन्गी ने पहनने के लिए एक नया सूट खरीद कर दिया। स्कूल में पढ़ते समय मैं जो कटी हुई पतलून पहना करता था उससे यह बिलकुल अलग था। मुझे महसूस हुआ मानो मैं खूब बड़ा हो गया हूँ।

फार्ट हेर विश्वविद्यालय में देश भर के नौजवान अश्वेत लोग पढ़ने आया करते थे। यहाँ पहली बार मेरी मुलाकात दूसरे कबीलों, जैसे सोथो, ज़ूलू और त्स्वाना लोगों से हुई।

मैंने नए दोस्त बनाए, जिनमें एक चतुर युवा छात्र ऑलिवर ताम्बो भी शामिल था। हालाँकि हम उस वक्त नहीं जानते थे कि आगे चल कर ऑलिवरऔर मैं एक-दूसरे की ज़िन्दगी में बेहद अहम बनने वाले हैं।

मैंने विश्वविद्यालय में खूब मेहनत की, पर साथ ही मस्ती भी की। मैंने दौड़ना, मुक्केबाज़ी और बालरूम नृत्य सीखा। मुझे छात्र परिषद् के सदस्य के रूप में चुना गया, पर मतदान केवल पच्चीस छात्रों ने किया था। ज़्यादातर छात्रों ने मत ही नहीं डाला था क्योंकि परिषद् उस स्थिति को बदल नहीं सकती थी जो छात्रों का मुख्य सरोकार था - कैफेटीरिया का घटिया खाना। मैंने प्रधानाध्यापक से कहा कि मैं छात्रों के सहयोग के बिना परिषद् में शामिल नहीं हो सकता। उन्होंने मुझे विश्वविद्यालय से निकाल बाहर करने की धमकी दी, पर मैंने अपना निर्णय नहीं बदला। मैं लौट कर विश्वविद्यालय गया ही नहीं। क्या मैं खुराफाती होने का अपना नाम सार्थक कर रहा था?

इधर 'महा निवास' में चाचा जोन्गी की मेरे और जस्टिस के बारे में कुछ दूसरी ही योजनाएं थीं। उन्होंने बताया कि हमारी शादी होने वाली है ओर उन्होंने हम दोनों के लिए दुल्हनें पसन्द कर लीं हैं। हम दोनों सकते में आ गए। हम शादी नहीं करना चाहते थे। हम दोनों ने तय किया कि हम जोहानसबर्ग भाग जाएंगे।

जोहानसबर्ग चार सौ मील से भी ज़्यादा दूर था। कोह्ज़ लोग उसे 'इगोली' नाम से जानते थे, जिसका मतलब होता है सोने का प्रदेश। वहाँ हम नौकरियाँ तलाशने और अपनी ज़िन्दगियाँ संवारने वाले थे। यह बड़ा साहसिक कदम था। अपने भविष्य के बारे में उम्मीदें और उत्तेजना से भर हमने अपने कदम उठाए और उस बड़े शहर की टिमटिमाती बत्तियों की दिशा में निकल पड़े।

जोहानसबर्ग हमारी कल्पना से कहीं अधिक बड़ा था। जहाँ तक हमारी नज़र जाती वहाँ बस लोग, दुकानें और मोटरगाड़ियाँ नज़र आतीं। पर ये उम्दा दुकानें और महँगीं मोटरगाड़ियाँ गोरों की थीं। ज़्यादातर काले लोग गरीब थे।

मैं शहर के बाहर एलैक्ज़ैण्ड्रा बस्ती में रहने गया, जहाँ छोटे-छोटे घरों में न तो बिजली थी, नल का पानी और सड़कों के नाम पर कच्ची मिट्टी की राहें थीं। एलैक्ज़ैण्ड्रा में जीवन कठिन था, पर वह मेरे लिए घर बना।

जस्टिस कुछ समय तक जोहानसबर्ग में रहा। पर कुछ वर्षों बाद जोन्गी चाचा की मौत हो गई और जस्टिस सरदार का पद संभालने पूर्वी केप लौट गया।

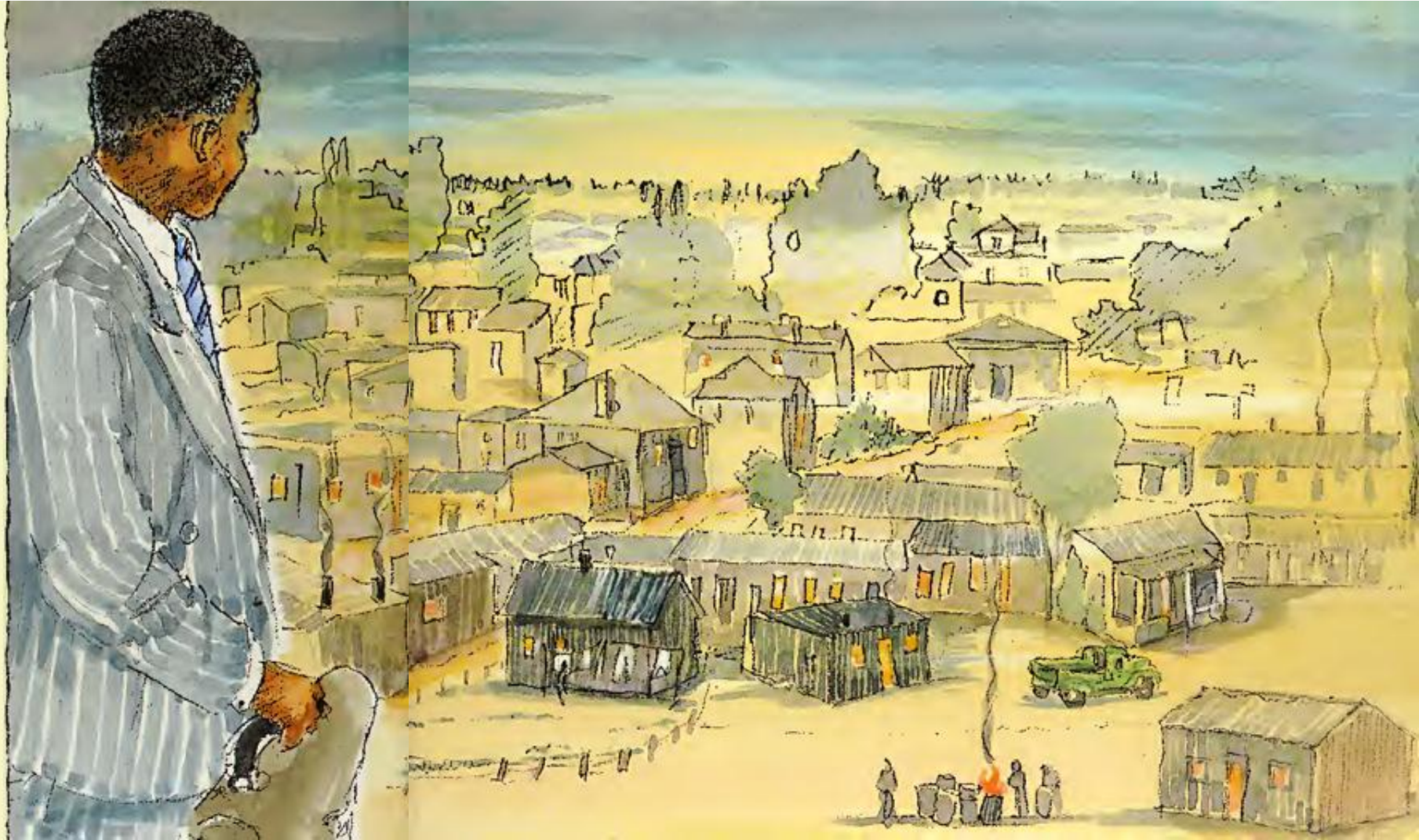

मेरी मुलाकात कई नए लोगों से हुई, पर मेरे जो घनिष्ठ दस्त बने उनमें से एक था वॉल्टर सिसुलु। वॉल्टर और उसका परिवार जोहानसबर्ग के पास औरलैण्डो पश्चिम में बसी बस्ती सोवेटो में रहता था। मेरी ही तरह वह भी पूर्वी केप से था, पर वह मुझसे काफी पहले से जोहानसबर्ग में रहने लगा था और इस शहर के लोगों और वहाँ की जगहों के बारे में बहुत कुछ जानता था।

मैं सिसुलु परिवार के घर में काफी समय बिताता था। वहीं मेरी मुलाकात सिसुलु परिवार की रिश्तेदार एवलिन मासे से हुई, जो पेशे से नर्स थी। हम दोनों में प्रेम हुआ और हमने शादी कर ली। हमारे दो बेटे और दो बेटियाँ हुईं। पर एक बेटी अधिक समय जीवित न रही। इसके बाद एवलिन और मैं जल्द ही अलग हो गए। हालाँकि मैंने अपने बेटों थेम्बेकीले और माकादो और अपनी बेटी माकेज़वी से करीबी रिश्ता बनाए रहा।

सिसुलु परिवार के यहाँ मैं अपने पुराने दोस्त ऑलिवर ताम्बो से भी मिला। हम दोनों कानून की पढ़ाई कर रहे थे। 1952 में हम दोनों ने मिल कर दक्षिण अफ्रीका की पहली अश्वेत कानूनी फर्म/कम्पनी खोली।

पर काले लोगों की ज़िन्दगियाँ सुधारने की कोशिश करने का एक तरीका और भी था। जब से गोरे दक्षिण अफ्रीका आए थे वे हम अश्वेतो पर राज करते रहे थे। मेरा दोस्त वॉल्टर अफ्रीकन नैशनल कांग्रस या एएनसी का सदस्य था, जो आज़ादी के लिए लड़ रही थी ताकि काले लोग अपना शासन खुद चला सकें। ऑलिवर और मैं भी एएनसी से जुड़े। हम वॉल्टर के घर में बैठ यह सोच-विचार और बहस करते कि इस अहम मसले पर सरकार का ध्यान आखिर किस तरह खींचें।

1944 में हमने एएनसी यूथ लीग की स्थापना की और हज़ारों अश्वेत युवाओं के उसमें भाग लेने की योजना बनाई। हम लोग शांतिपूर्ण आंदोलन में सड़कों पर मार्च करते और आज़ादी की मांग करते। फिर कोई हमारी अनदेखी नहीं कर सकता था।

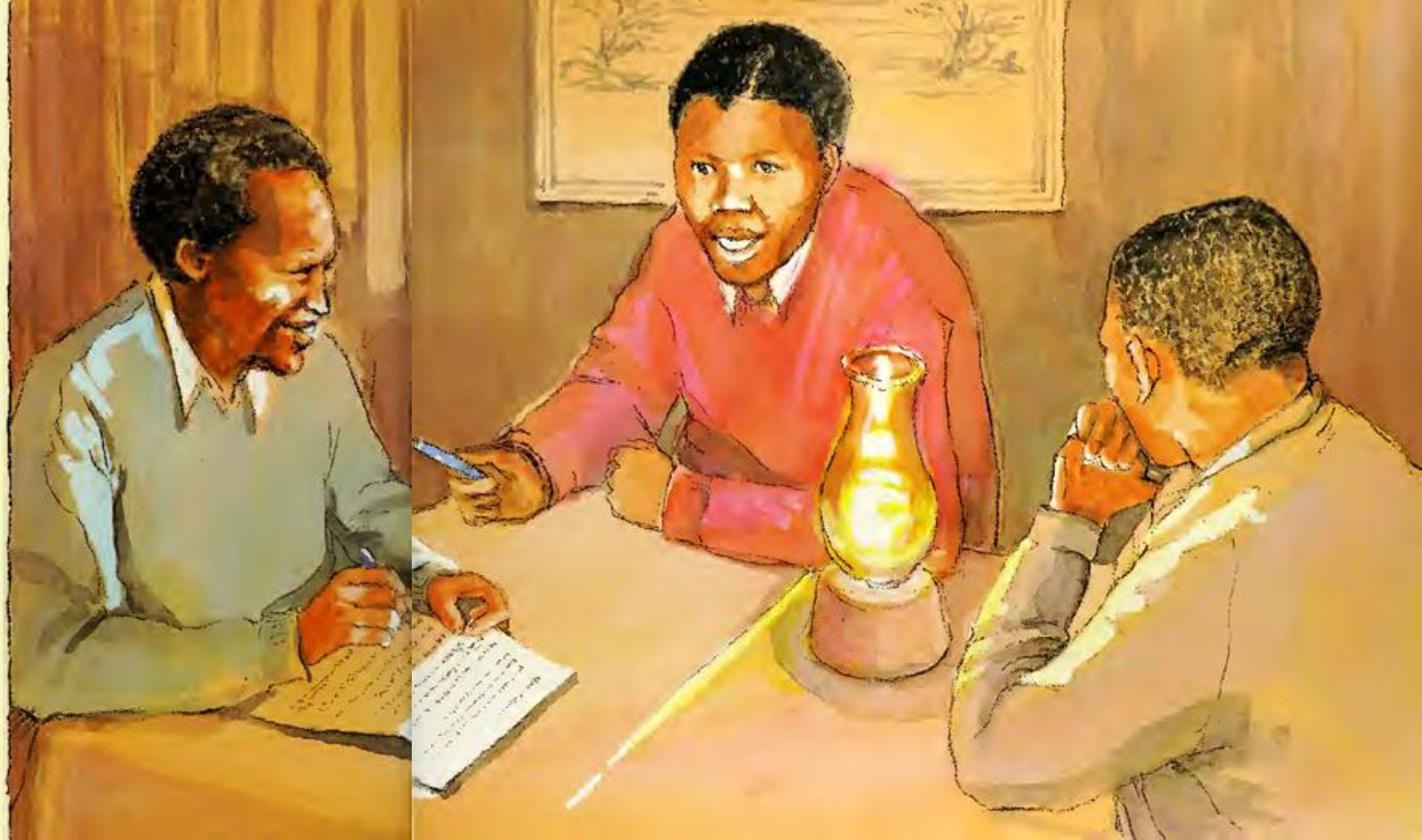

1948 में सरकार ने अपार्थाइड (रंगभेद) के नए कानून लागू करने शुरू किए जो कालों और गोरों को अलग-अलग समूहों में बाँटते थे। गोरे लोग उप-नगरों में रहते थे, जबकि काले बस्तियों में। सरकार ने काले और गोरे लोगों के लिए अलग-अलग स्कूल, गिरजा घर और सिनेमा घर बनाए। यहाँ तक कि डाक घरों और दुकानों तक में घुसने के लिए दरवाज़े तक अलग थे।

सोलह साल से बड़े सभी अश्वेत लोगों को हमेशा अपने पास एक पासबुक रखनी होती थी जिसमें उनका नाम पता और काम की जगह लिखी होती थी। अगर लोगों के पास वो पासबुक नहीं होती तो उन्हें जेल में डाल दिया जाता था।

अपार्थाइड एक बेहद क्रूर व्यवस्था थी। इसमें दक्षिण अफ्रीका के हरेक नागरिक को उसकी नस्ल के हिसाब से किसी श्रेणी में रखा जाता था। उदाहरण के लिए 'काला', 'कलर्ड' या 'गोरा'। जो लोग गोरे नहीं थे उनकी ज़िन्दगियों को इस तरह नियंत्रित किया जाता था। इस कानून से मैं और एएनसी के मेरे सभी साथी बेहद नाराज़ हुए। हमने 1952 में अवज्ञा आंदोलन के नाम से एक विरोध का नेतृत्व किया। सभी अश्वेत लोगों से कहा गया कि वे डाक घरों, दुकानों और रेलगाड़ियों में चस्पाँ केवल गोरों के लिए की हिदायत को अनदेखा करें। इस विरोध में 250 से भी अधिक लोग गिरफ्तार कर लिए गए, पर आंदोलन में दरअसल हज़ारों लोगों ने हिस्सा लिया।

सरकार ने अपार्थइड कानून को तो नहीं हटाया, पर एएनसी के सदस्यों की संख्या में भारी इज़ाफा हुआ। हमारी ताकत बढ़ रही थी। सरकार ने मुझ पर पाबन्दी लगाई कि मैं एएनसी की बैठकों में शिरकत न करूँ और अपार्थाइड का विरोध न करूँ। पर मैं गुपचुप तरीके से एएनसी के लिए काम करता रहा।

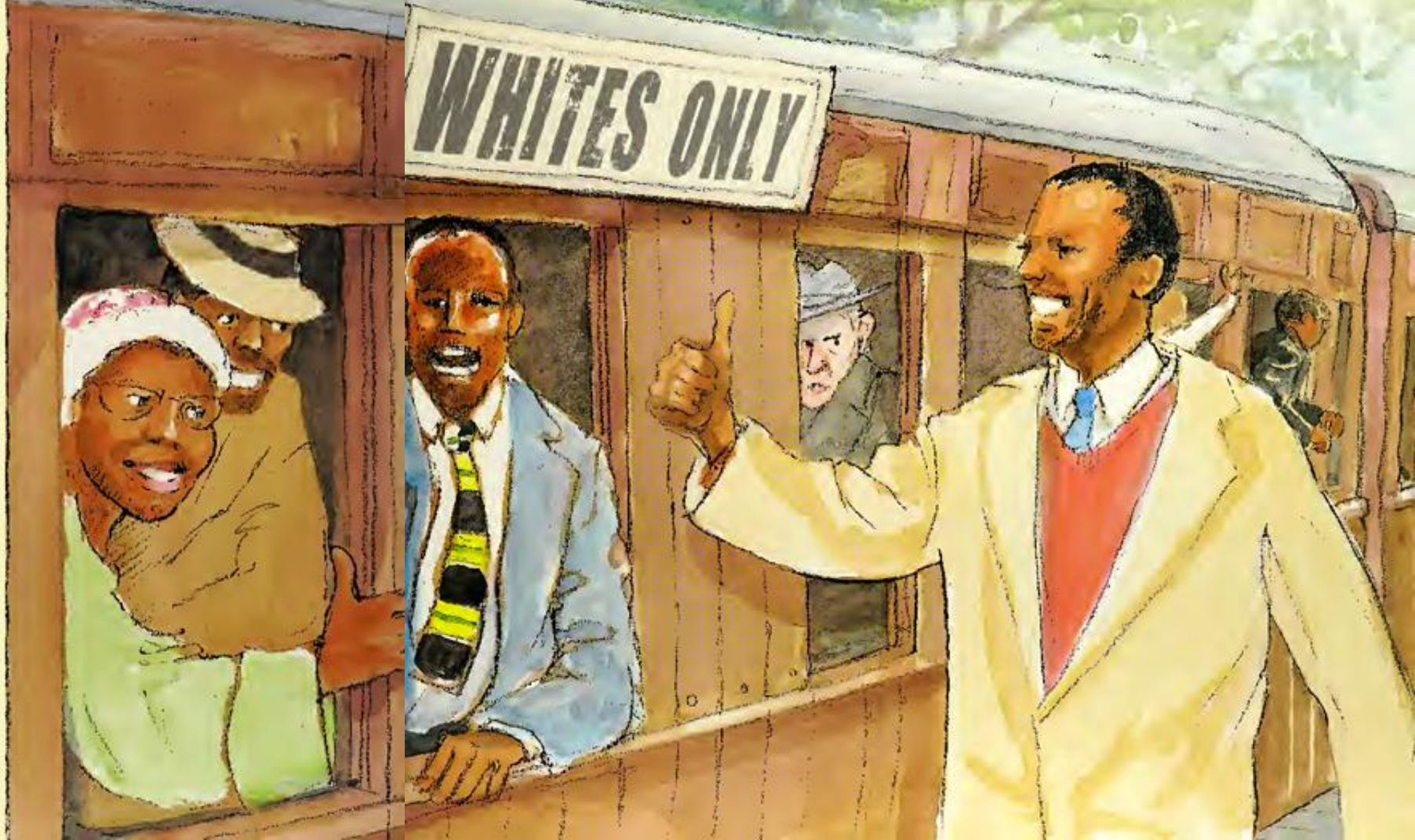

ऐसा नहीं था कि केवल काले लोग ही अपार्थाइड के विरुद्ध हों। हज़ारों 'कलर्ड', भारतीय मूल के लोग और कई गोरे दक्षिण अफ्रीकी भी इसके खिलाफ थे। 1950 के दशक के शुरुआती सालों में इन विभिन्न समूहों ने मिल कर कांग्रेस अलायन्स की स्थापना की। 1955 में एएनसी और कांग्रेस अलायन्स के सदस्य जोहानसबर्ग के पास क्लिपटाउन में मिले ताकि वे जनता की ओर से आज़ादी का घोषणापत्र तैयार कर सकें। यह बैठक कांग्रेस आव द पीपल थी और इसके घोषणापत्र ने दक्षिण अफ्रीका के सभी निवासियों की आज़ादी और देश में लोकतंत्र के लिए संघर्ष करने का वादा किया था। घोषणापत्र के शुरुआती शब्द थे ...

ज़ाहिर था कि सरकार को हमारा घोषणापत्र रास नहीं आया और उसने कांग्रेस के 156 सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया। इन गिरफ्तार लोगों में ऑलिवर, वॉल्टर और मैं भी शामिल थे। हम पर सरकार को तोड़ने की साज़िश रचने का आरोप लगाया गया। यह मामला चार वर्षों तक अदालत मे चला और अंत में हमें दोषी नहीं पाया गया।

इस दौरान मैं एक बार फिर से प्रेम में पड़ा। विनी मादिकिज़ेला एक सामाजिक कार्यकर्ता थी और एएनसी की सदस्य भी। हमने 1958 में शादी की और हमारी दो बेटियाँ - ज़ेनानी और ज़ेन्दज़ी, का जन्म हुआ।

1960 में हमारे मुकदमे के दौरान एक दर्दनाक हादसा घटा जिससे सारी दुनिया सकते में आ गई।

जोहानसबर्ग के पास शार्पविल में पाँच हज़ार लोगों ने अपनी पासबुक हमेशा साथ रखने के नियम का विरोध करने के लिए वहाँ के थाने तक जुलूस निकाला। वे निहत्थे थे फिर भी पुलिस ने उन पर गोलियाँ बरसाईं।

उनहत्तर लोग मारे गए और चार सौ घायल हुए।

शार्पविल के हादसे के बाद सरकार ने सख्त कदम उठाते हुए एएनसी व आज़ादी के लिए लड़ने वाले अन्य संगठनों को प्रतिबन्धित कर दिया। सरकार नहीं चाहती थी कि काले लोग भी दक्षिण अफ्रीका के शासन में हिस्सेदारी करें। ज़ाहिर था कि हमारे शांतिप्रिय प्रदर्शन बेअसर सिद्ध हुए थे, पर फिर भी हम अपनी कोशिशें बन्द नहीं करना चाहते थे। हमने सोचा कि आज़ादी पाने का एक ही तरीका हमारे पास बचा है। वह यह कि सरकार से ठीक उसी तरह लड़ना जिस तरह वह हमसे लड़ रही है - बन्दूकों से।

एएनसी ने तब एक सेना बनाई, जिसे हमने *अमकाण्डो की साइज़्वे* का नाम दिया। कोहज़ भाषा में इसका मतलब होता है 'राष्ट्र का भाला'। मुझे एक खुफिया मिशन पर विदेश भेजा गया ताकि मैं दूसरे देशों से अपार्थाइड से लड़ने में मदद माँगूं। मैंने सैनिक प्रशिक्षण भी लिया।

1962 में मैं एक जाली पासपोर्ट के सहारे दक्षिण अफ्रीका लौटा, जिसमें मेरा नाम डेविड मोसमायाई दर्ज था। मैं कई महीनों तक छिपा रहा, जबकि पुलिए नैल्सन मण्डेला को तलाशती रही।

तब अचानक अगस्त माह में एक दिन मेरी गाड़ी रोकी गई और मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। गैरकानूनी रूप से देश से बाहर निकलने और कामगरों को हड़ताल करने के लिए उकसाने के जुर्म में मुझे पाँच साल की कैद की सज़ा सुनाई गई। बाद में पुलिस ने मेरे कई अन्य साथियों को भी कैद कर लिया। मेरी पाँच साल की सज़ा के महज नौ महीने ही गुजरे थे कि मुझे बताया गया कि मुकदमा फिर से चलाया जाएगा। इस बार हम सब पर सरकार का तख्ता पलटने की साज़िश रचने का आरोप लगाया गया। अगर यह आरोप अदालत में सिद्ध होता तो हमें फाँसी की सज़ा हो सकती थी।

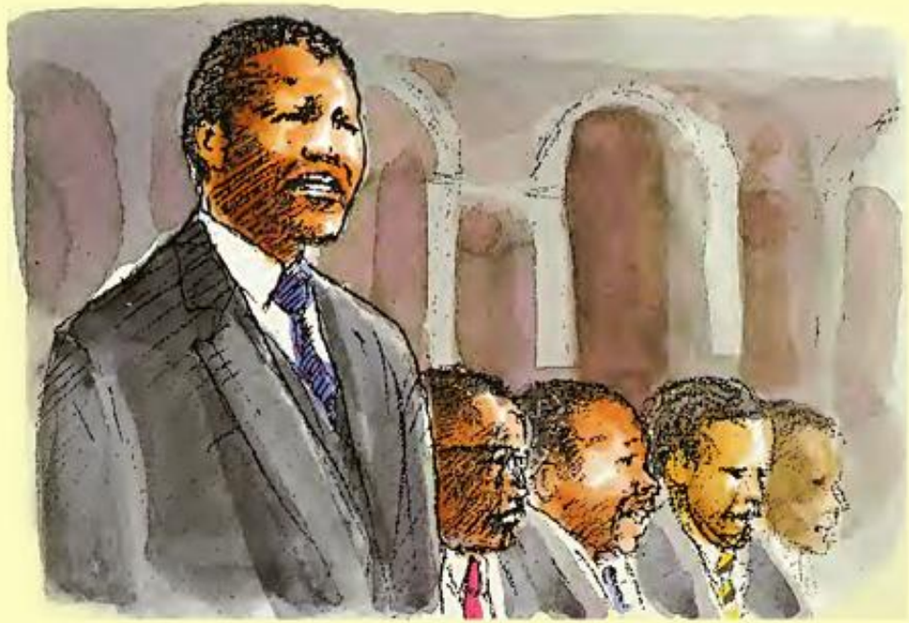

यह नया मुकदमा अक्तूबर 1963 में शुरू हुआ और अप्रेल 1964 में मैंने हम सभी साथियों के बचाव में जिरह की। मैंने अदालत से कहा कि एएनसी एक शांतिप्रिय संगठन है, पर क्योंकि सरकार ने उस पर पाबन्दी लगा दी है, हमारे पास शांतिपूर्ण तरीके से विरोध करने का कोई रास्ता ही नहीं बचा है। हमें गिरफ्तार किया गया है, हमारी हत्या तक की गई है। यही कारण है कि हमें बन्दूकों से लड़ना पड़ा। मैंने कहा ''मैं हमेशा से लोकतंत्र के आदर्श को सहेजता रहा हूँ, जिसमें सभी लोग एक-दूसरे के प्रति सद्भावना से जिएँ ... इस आदर्श के लिए मैं अपनी जान देने को भी तैयार हूँ।''

हममें से आठ लोगों को दोषी पाया गया, पर हमें फाँसी की सज़ा नहीं दी गई। इसके बदले हमें उम्र कैद की सज़ा सुनाई गई। ज़िन्दगी भर की कैद! क्या मैं फिर कभी अपनी पत्नी, अपनी माँ और बच्चों को देख भी सकूँगा?

हमें रॉबैन द्वीप कारावास ले जाया गया, जो केप टाउन के तट से कुछ दूरी पर था। सबको सिवा डेनिस गोल्डबर्ग के। हम आठों में वही अकेला गोरा इन्सान था। उसे सज़ा की मियाद पूरी करने एक अलग कैदखाने में भेजा गया।

रॉबैन द्वीप में मेरी कोठरी इतनी छोटी थी कि अगर मैं अपनी चटाई बिछा लेटता तो मेरे हाथ और पैर दोनों सिरों की दीवारों को छूते थे। मुझे कुछ पतले कम्बल और पेशाब आदि के लिए एक बाल्टी दी गई। अब यही कोठरी मेरा घर बनने वाली थी।

मैं अपनी उम्मीद और हौसला बनाए रखने की कोशिश करता रहा, पर यह आसान न था। शुरुआत में हमें एक साल में केवल दो लोगों से मिलने और सिर्फ दो चिट्ठियाँ पाने की इजाज़त थी। हमारी चिट्ठियाँ हमें देने से पहले कैदखाने का कोई एक गार्ड उसे पढ़ता था और वह सब काला कर देता था जिसे उसके हिसाब से हमें जानना नहीं चाहिए।

मुझे घर से दो बार बुरी खबर मिली। पहले मुझे बताया गया कि मेरी माँ की मौत हो गई है। इसके बाद पता चला कि मेरे सब से बड़े बेटे थेम्बेकीले की मौत एक कार दुर्घटना में हो गई है। जिस दिन मुझे यह खबर मिली मैं दिन भर अपनी कोठरी में बैठा उसके और अपने परिवार के बाकी लोगों के बारे में सोचता रहा। यह मेरी ज़िन्दगी का सबसे दुखदायी दिन था।

हमें रेडियो सुनने या अखबार पढ़ने की इजाज़त भी नहीं थी। हफ्ते, महीने, सालों-साल गुज़रते गए, पर हमें यह पता ही नहीं था कि देश-दुनिया में क्या घट रहा था। एक दिन मैंने देखा कि वार्डन अपना अखबार कुर्सी पर छोड़ गया है। मैंने लपक कर उसे उठाया और पढ़ने लगा। पर मैं पकड़ा गया और मुझे सज़ा के तौर पर तीन दिन के लिए काल-कोठरी में बन्द कर दिया गया बिना खाने के और पीने के लिए दिया गया सिर्फ चावल की माँड।

साल धीमे-धीमें गुज़रते गए। पाँच बरस ... दस... बीस बरस। अब अपने बालों का रंग धूसर बनाने के लिए मुझे राख की दरकार नहीं रही!

पर कैदखाने के बाहर आज़ादी की जंग जारी थी।

हालाँकि दक्षिण अफ्रीका में एएनसी पर पाबन्दी लगी हुई थी, संगठन देश के बाहर सक्रिय था। ऑलिवर ताम्बो अब विदेश में रह रहा था और एएनसी का अध्यक्ष था। इधर दनिया की कई सरकारों ने हमें अपना सहयोग देना शुरू कर दिया था।

1980 के दशक में एएनसी ने 'मण्डेला को रिहा करो' अभियान शुरू किया। दुनिया भर के लोगों से अनुरोध किया गया कि वे मुझे और मेरे साथियों को रिहा करने और एएनसी पर से पाबन्दी हटाने के लिए दक्षिण अफ्रीका की सरकार पर दबाव डालें। हज़ारों-हज़ार लोगों ने इस याचना पर दस्तख़त किए।

मार्च 1982 में वॉल्टर, कुछ अन्य बन्दियों और मुझे केप टाउन के पास पालीस्मूर कारावास में ले जाया गया। क्या यह इस बात का संकेत था कि स्थितियाँ बदल रही हैं? क्या मैं यह उम्मीद करने की ज़ुर्रत कर सकता था की आज़ादी की जंग समाप्ति की ओर बढ़ रही है? सरकार और मैंने देश में शांति बहाल करने के लिए गुप्त बातचीत शुरू की।

1988 में विक्टर वस्टर नामक कैदखाने में ले जाया गया। यहाँ मुझे रहने के लिए एक कोठरी के बदले एक बंगला दिया गया जिसमें सोने का एक कमरा, एक रसोईघर और तैरने के लिए तरण ताल था!

सरकार के साथ मेरी बातचीत जारी रही, और दिसम्बर 1989 में मैं राष्ट्रपति क्लर्क से मिला। हमने एक नए दक्षिण अफ्रीका पर चर्चा की। चीज़ें अब बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ीं।

अक्तूबर 1989 में ही रॉबैन द्वीप कारावास के मेरे कई पुराने साथियों को रिहा कर दिया गया था। इनमें वॉल्टर सिसुलु भी शामिल था। तब राष्ट्रपति क्लर्क के साथ मेरी बैठक के दो महीने बाद 2 फरवरी 1990 को राष्ट्रपति क्लर्क की इस घोषणा ने दुनिया भर को चौंका दिया कि मुझे अनेक दूसरे राजनीतिक बन्दियों के साथ रिहा कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि एक नए राष्ट्र पर बातचीत करने का समय आ चुका है।

11 फरवरी 1990, को मैं कैदखाने से बाहर निकला। जब मुझे पहली बार रॉबैन द्वीप कारावास में ले जाया गया था, तब से मेरे जीवन के 27 वर्ष बीत चुके थे। पर आज़ादी का मेरा यह लम्बा सफर लगभग पूरा होने वाला था।

बाहर निकल अपनी पत्नी विनी को बाँहों में भरना, अपने चार खूबसूरत बच्चों को देखना, जो बड़े हो चुके थे, और अपने नातियों-पोतों को हंसते-खिलखिलाते, मुझे नाना-दादा बुलाते सुनना एक अद्भुत अनुभव था।

सोवेटो का हमारा घर हर दिन तब हंसी-ठहाकों और खुशी के आँसुओं से भर जाता, जब मेरे वे सारे दोस्त मेरा स्वागत करने आते जिन्हें मैंने पिछले सत्ताईस बरसों से नहीं देखा था।

हमारे रिहा होने के बावजूद करने को बहुत काम बाकी था। एएनसी और सरकार देश में शांति और एक ऐसे दक्षिण अफ्रीका पर बातचीत करने लगे जिसमें सभी काले और गोरे नागरिकों की साझेदारी हो।

27 अप्रेल 1994 को लाखों युवा और बुज़ुर्ग अपने-अपने घरों से मतदान करने निकले। अश्वेत लोगों के लिए मतदान करने का यह पहला मौका था। उन्होंने गोरों के साथ मिलकर एक नए दक्षिण अफ्रीका के लिए मतदान किया। यह दिन सचमें अद्भुत था।

मई, 1994 में मैं दक्षिण अफ्रीका का वो पहला राष्ट्रपति बना जिसे सभी लोगों ने चुना था। मैं पिचहत्तर साल का हो चुका था। आज़ादी का मेरा लम्बा सफर समाप्त हो चुका था।

पर साथ ही एक नया सफर शुरू हुआ था - एक नए दक्षिण अफ्रीका के निर्माण का सफर। हम सबको एक-दूसरे का हाथ थाम यह कहना था कि हम एक राष्ट्र हैं, एक कौम हैं जो भविष्य की दिशा में कूच कर रहे हैं। ऐसे भविष्य की ओर जिसमें सभी रंग के लोग शांति से एक-दूसरे के साथ जीना सीखेंगे।

नैल्सन मण्डेला अगले पाँच वर्षों तक दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति रहे। अपने वादे के अनुसार वे केवल एक सत्र के लिए राष्ट्रपति रहे और 1999 में उन्होंने यह पद त्याग दिया। हालाँकि वे तब भी दुनिया को सबके लिए एक बेहतर स्थान बनाने के लिए अन्य देशों के नेताओं के साथ लगातार काम करते रहे। उन्होंने नैल्सन मण्डेला बाल कोष, नैल्सन मण्डेला फाउन्डेशन और मण्डेला रोहडस् फाउन्डेशन की स्थापना की।

हर साल 18 जुलाई को उनके जन्मदिन पर दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय नैल्सन मण्डेला दिवस मनाया जाता है। इस दिन के उपलक्ष्य में लोग कम से कम 67 मिनट का समय दूसरों के लिए कुछ करने में बिताते हैं। प्रत्येक मिनट उन 67 वर्षों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जो मण्डेला ने आज़ादी व शांति के लिए संघर्ष करने में बिताए थे।

5 दिसम्बर 2013 को 95 वर्ष की आयु में मण्डेला का देहान्त हुआ। पर उनकी स्मृति जीवित है और हम सबको प्रेरित करती है कि हम एक ऐसे विश्व में भरोसा बनाए रखें जहाँ कोई भी दमन और गरीबी न झेले।

अंत